राष्ट्रीय

# छात्र-शक्ति

दिल्ली

फरवरी-मार्च '88

इस अंक में—

हिंसा की राजनीति बंद करो ...1

मातृ वंदना ...2

कैसे आकास में .. 3

इक साज की बदोलत ...4

Netaji Subhash Chandra Bose ...16

Fight for Student Cause ...19

Struggle is the Rightpath ...20

★

राष्ट्रीय छात्र शक्ति

सम्पादक मंडल

ललित बिहारी गोस्वामी

राकेश सिन्हा, संजय जैन

आलोक गुप्ता

★

प्रकाशन कार्यालय

अ० भा० विद्यार्थी परिषद्

16/3676, रैगरपुरा

हरध्यान सिंह मार्ग

करोल बाग, नई दिल्ली-5

दूरभाष : 5728215

## हिंसा की राजनीति बन्द करो

—राकेश कुमार सिन्हा

केरल में राष्ट्रवादी ताकतों की संगठत शक्ति वहाँ की मार्क्सवादी नेतृत्व वाली वाम मोर्चे की सरकार के लिए सरदर्द बन गई है। कल तक जो 'प्रजातांत्रिक मूल्यों' को बात कर रहे थे, सत्ता मिलते ही दुर्योधन की तरह उन्मादी बन हिंसा का तांडव नृत्य करने में थोड़ी भी शर्म का अनुभव नहीं कर रहे हैं। केरल की छात्र - राजनीति को दलगत स्वार्थी घरौंदे से बाहर कर स्वस्थ छात्र-युवा आंदोलन खड़ा करने में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की अहम भूमिका से घबराए मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के 'उन्मादी तत्व' सरकारी संरक्षण में परिषद के कार्यकर्ताओं, समर्थकों और सहानुभूति रखने वालों पर दिन-दहाड़े आक्रमण कर रहे हैं।

मार्क्सवाद के अनुसार शक्ति (Power) का मतलब 'Domination' होता है और वे राज्य का उपयोग अपने सिद्धांत को आगे बढ़ाने में करना परम कर्त्तव्य समझते हैं। केरल के गरीब मछुआरे कार्यकर्त्ता पर जानलेवा हमला, हरिजन छात्रों को चाकू मारना उनकी इसी कार्यशैली का अंग है। वे जो कुछ भी करते हैं उसे 'सैद्धांतिक जामा' पहनाकर न्यायोचित ठहराने की कोशिश करते हैं। भारतीय मार्क्सवादियों का यह दोगला चरित्र द्वितीय विश्वयुद्ध के समय भी ऐसा ही था जब वे सुभाषचन्द्र बोस और जे० पी० को 'गद्दार' 'फासिस्ट' की संज्ञा दे रहे थे। जब कांग्रेस के नेता जेल में थे तब ये अपनी राजनीतिक खिचड़ी अलग पका रहे थे। अतः मार्क्सवादी अपने चरित्र के अनुसार सब ठीक कर रहे हैं परंतु राज्यशक्ति का प्रयोग कर 'दमन और हिंसा' का आश्रय स्वस्थ समाज और राष्ट्र के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध छात्रयुवा शक्ति को दबा नहीं सकता। आपात्काल में भी परिषद एकमात्र छात्र-संगठन था जिसे व्यापक रूप से दमन का सामना करना पड़ा था।

केरल की नायनार सरकार को मालूम होना चाहिए कि एरनाकुलम और मल्लपुरम में खून के छींटे उसके लिए कालसूचक हैं। समय रहते वह सचेत होकर हिंसा रोके अन्यथा कीमत महंगी पड़ेगी। दम है तो सिद्धांतों, व्यवहार और चरित्र के बल पर आगे बढ़ें, हथियार से नहीं। हथियार की धार से छात्र युवा आंदोलन खंडित नहीं हो सकता, 'दम है कितना दमन में तेरे—देख लिया है देखेंगे'।

# मातृ-वंदना

(सभी भारतीय भाषाओं में भारत माँ की वंदना की गई है। यहाँ प्रस्तुत है नागरी लिपि में उड़िया भाषा का एक गीत। यह गीत हमें श्री संजीव नायक के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।)

चिर वन्दिता अभिनंदिता
एई भारत भुई।
नाहि आहार आपणा पर
सेत ममतामयी सेत ममतामई॥
सुषमा भरा दुःख पासोरा
सबुज सोभा सिरी।
कि सुन्दरता सागर ढेऊ
नदि कानन गिरी
धरारे सते सरग हसे
तुलना आर नाहि ॥१॥
चिर वन्दिता.....
कोटिरो सुत सुता अमित
गोटिसे कण्ठे आजि
गाइबु आमे माआर जय
बाधा बन्धन तेजि
ढालि देबारे मन पराण
ताहारि सेवा पाई ॥२॥
चिर वन्दिता.....

(यह भारत भूमि चिरवंदनीया एवं अभिनंदनीया है। इस ममतामयी में अपने पराये का भाव नहीं है। सभी दुःखों को भुलाने वाली यह हरे भरे सौन्दर्य से युक्त सुषमापूर्ण है। कितनी सुन्दर हैं इसके सागर की लहरें, नदियाँ, जंगल और पर्वत ! ऐसा लगता है मानों धरती पर स्वर्ग हँस रहा हो, इसकी कोई तुलना नहीं है। इसकी हम करोड़ों संतान एक सूत्र जैसे हैं। हम माँ का जयगान गायेंगे। हर बाधा बंधन तोड़कर इसकी सेवा में हम अपना मन प्राण लगा देंगे।)

(Ever-worshiped and welcomed is the land of India. India is the mother of all of us. It equally treats us all, without any prejudice. With her beautiful soothing view, she unables one to forget one's pains and sufferings. How very beautiful are the tides and waters of its ocean, her rivers and mighty hills. It seems as if the heaven is smiling over the earth. She is simply incomparable. We, the children of India, shall sing songs of her glory, barring all hurdles and obstacles, shall denote our lives in her service.)

# कैसे आकाश में सूराख नहीं हो सकता.....

—डॉ० अवनिजेश अवस्थी

देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुए 40 वर्ष हो गए हैं। 40 स्वतंत्र वर्षों में राष्ट्र को विकास के जिस शिखर तक पहुँचना चाहिए था, वहाँ तक वह नहीं पहुँच सका। वरन ऐसा लगता है कि एक ईमानदार, विद्वान्, वैज्ञानिक या अन्य किसी भी क्षेत्र में विशेष योग्यता रखने वाले व्यक्ति को राष्ट्र से जो सम्मान और उत्साह मिलना चाहिए था वह नहीं ही मिला और परिणामस्वरूप प्रतिभा का निर्यात या पलायन दिनों दिन बढ़ता ही गया। ऐसी स्थिति में राष्ट्र के सामान्य क्रिया कलाप में कर्त्तव्यनिष्ठ युवक की उदासीनता स्वाभाविक थी। प्रत्येक युवक राष्ट्र से मोहभंग की मानसिकता में जीता हुआ विदेश में अपनी प्रतिष्ठा के स्वप्न देखने लगा।

लगभग एक सहस्र वर्ष की गुलामी भोगने के पश्चात् 40 वर्ष की आजादी क्या मायने रखती है—ऐसा प्रश्न भी कई बार उठाया जाता है। किंतु यदि इतिहास को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करने का कुत्सित प्रयास किया जाय तो यह भी स्पष्ट हो जाएगा कि इस देश ने गुलामी भोगी भले ही हो स्वीकार कभी नहीं की। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी पराधीनता के विरुद्ध देश का एक स्वर आपात् काल के संदर्भ में पूरी तरह स्पष्ट ही है।

किंतु चिंता का विषय यह है कि आजादी के बाद की पीढ़ी को हर तरह से अपनी स्वतंत्रता के विषय में उदासीन बनाने की कोशिशें हो रही हैं। शक्ति, क्षमता और उत्साह से भरपूर २२ वर्ष का नौजवान अपने कैरियर की चिंता में देश की वर्तमान स्थिति पर सोचने से कतराता है।

यह कैसा स्वराज्य है? इसी स्वराज्य के हेतु इतने बलिदान दिए गए थे! ऐसा स्वराज्य जिसमें राजनीति भ्रष्टाचार का पर्याय बन गई हो। कोई भी ईमानदार नागरिक अपने ही देश की राजनीति में हिस्सा लेने से कतराता हो और यदि वह सक्रिय हो भी जाए तो संदेह की स्थिति से बच नहीं सकता।

आज युवकों के समक्ष यह गम्भीर चुनौती है। या तो वे व्यवस्था को ज्यों का त्यों स्वीकार कर स्वयं भी उसके अंग बन जाएँ और या फिर कटिबद्ध हो जाएँ इस भ्रष्ट व्यवस्था के समूल नाश के लिए। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व प्रत्येक राष्ट्रवादी नागरिक के सम्मुख एक स्पष्ट लक्ष्य था 'स्वतंत्रता' तब राष्ट्र के शत्रु की पहचान बहुत सरल थी। किंतु स्वतंत्रता के पश्चात् जिन हाथों में सत्ता गई, दुर्भाग्य से उनके अपने स्वार्थ अत्यधिक प्रबल हो गए। राष्ट्र के स्थान पर एक व्यक्ति की महत्ता स्थापित करने का जो षड़यंत्र चला उसके तहत राष्ट्रवादी संस्थाओं और राष्ट्रवाद की भावना तक को सायास तिरोहित करने का अभियान प्रारंभ किया गया। अपनी ही संस्कृति एवं भाषा के खिलाफ एक ऐसा वर्ग तैयार किया गया (बिल्कुल मैकाले की तर्ज पर) जो उनकी सत्ता कायम रखने में उनकी यथासंभव मदद करे। लेकिन इन सारी विपरीत स्थितियों का अस्तित्व जहाँ एक सचाई है, वहीं इससे भी बड़ी एक और सचाई है और वह यह कि इस सबके विरुद्ध ईमानदार पतला करने वाली अनेक राष्ट्रवादी संस्थाओं का विकास। इनके माध्यम से यदि हम सभी अपने स्वार्थ को भूल कर थोड़ा सा भी इस दिशा में आगे बढ़ेंगे तो देखेंगे—कैसे आकाश में सूराख नहीं हो सकता..."

माननीय श्री केलकर जी: विनम्र श्रद्धांजलि—

# 'इक साज की बदौलत सौ तार थरथराए'

—कु० सुरेखा गुप्ता

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रारंभकर्ताओं में सर्वप्रमुख एवं आजीवन परिषद से एकात्म भाव से जुड़े माननीय यशवंतराव केलकर जी का पिछले माह महाप्रयाण हुआ। 'जवान के निशान मशाल' को निरंतर प्रज्वलित रखने के लिये जीवन के एक-एक क्षण का होम केलकर की साधना का स्वरूप रहा। परिषद् कार्यकर्ता के आदर्श के रूप में केलकर जी का नाम सर्वत्र लिया जाता रहा है।

ई० सन् 1925 की 25 अप्रैल को श्रीमान् केलकरजी का आविर्भाव महाराष्ट्र प्रांत के पंढरपुर नामक स्थान पर हुआ। अध्ययन समाप्ति के पश्चात् जीविका के लिये अध्ययन एवं समाज-कार्य के लिये परिषद्, यही उनका जीवन रहा। दीपक की भांति स्वयं प्रकाशित होना एवं दूसरों को प्रकाशित करने की अद्भुत क्षमता उनमें थी। व्यक्ति कैसे असामान्यता में सामान्य एवं 'सामान्यता में असमान्य' होता है, इसके जीवंत प्रमाण वे थे। कार्यकर्ताओं को निरंतर प्रोत्साहित करना, उनके छिपे गुणों को ऊपर उभारना, देश एवं राष्ट्र का निरंतर मनन, समाज का सोद्देश्य संगठन, सामूहिक रूप से चिंतन कर निष्कर्षों पर पहुंचना और फिर उन्हें व्यवहार के धरातल पर साकार करना, किसी भी उपलब्धि का श्रेय अपने ऊपर न लेकर सबमें बांट देना जिससे प्रत्येक कार्यकर्ता को अनुभव हो कि चिंतन करके जिन निष्कर्षों का निष्पादन किया गया है एवं तदनुरूप जैसा व्यवहार हुआ है, उसमें उसकी भी हिस्सेदारी है, इस भावना को विकसित करने की दिशा में प्रयासपूर्वक चेष्टा, स्त्री एवं पुरुष दोनों को समान रूप से सक्षम मानना इत्यादि अनेक ऐसे गुणों की इंगित किया जा सकता है, जो श्री केलकर जी में स्वाभाविक रूप से थे।

'दीन दयाल शोध संस्थान' दिल्ली में 8 जनवरी 1988 को श्री केलकर जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए पुराने एवं नये कार्यकर्ता एकत्रित हुए। परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष माननीय श्री राजकुमार जी भाटिया, परिषद् के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी कोहली, उत्तरांचल के पूर्व संगठन मंत्री एवं वर्तमान में दीनदयाल शोध संस्थान के सचिव श्रीमान् महेशचन्द्र जी तथा प्रसिद्ध पत्रकार श्री राम बहादुर राय के श्री केलकर जी को भाव-सुमन अर्पित किये। अंत में सभी ने मौन खड़े रहकर श्री केलकर जी के प्रति हृदय की भावनाओं को व्यक्त किया। आज उनका पार्थिव शरीर हमारे बीच नहीं है, लेकिन एक दीपस्तंभ की भांति उनका कृतित्व हमारा मार्गदर्शन करेगा, ऐसा हमारा अटल विश्वास है। हमारी प्रेरणा के अजस्र स्रोत श्री केलकर जी के कृतित्व के संबंध में 'इक साज की बदौलत सौ तार थरथराए' इन शब्दों द्वारा अपनी हार्दिक भावनाओं का ज्ञापन करती हूँ।

# निरहंकारी संगठक

—प्रा. राजकुमार भाटिया, नई दिल्ली

**(माननीय श्री केलकर जी की षष्टिपूर्ति के अवसर पर लिखा गया लेख—सं.)**

श्री यशवंतराव केलकर से मेरा परिचय लगभग 17 वर्ष पुराना है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद-रूपी भवन के निर्माण में उन्होंने नींव के पत्थर की शद्वश: भूमिका निभाई है। एक नि:स्वार्थी, निरहंकारी, प्रसिद्धिपराड़मुख एवं पदलिप्सा-विहीन सामाजिक कार्यकर्ता का वे ज्वलंत उदाहरण हैं। वे ऐसे व्यक्ति हैं जो अनवरत कार्यरत रहते हुए भी बाह्या जगत के लिए अनजाने हैं पर जिनके व्यक्तित्व की छाप विद्यार्थी परिषद संगठन के हर पहलू तथा उनके संपर्क में आने वाले हर कार्यकर्ता में स्पष्ट दिखाई देती है। यूं तो उनके बारे में बहुत कुछ लिखा जा सकता है पर मैं यहां उनके व्यक्तित्व की उन विशेषताओं का उल्लेख करुंगा जिसकी अनुभूति मैंने स्वयं की है।

विद्यार्थी परिषद के कार्य से मुझे कई बार बम्बई जाने का अवसर मिला। दो चार बार ऐसे प्रसंग आये कि श्री केलकर जी, अन्य कुछ कार्यकर्ता और मैं एक स्थान से दूसरे स्थान को जा रहे थे। साथ चलनेवाले कार्यकर्ताओं के मन में यह विचार आता था कि हमें समय बचाने के लिए टैक्सी से यात्रा करनी चाहिए। पर सभी को यह भी लगता था कि श्री केलकर जी इस सुझाव को पसंद नही करेंगे। इस लिए हम चुपचाप बस स्टॉप या स्थानीय रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ते थे। श्री केलकर जी अति सामान्य व्यक्ति की तरह जीवन व्यतीत कर यह प्रभाव पैदा करते हैं कि सामाजिक कार्यकर्ता कितने भी बड़े पद पर क्यों न हो उसे यथा-संभव कम खर्चीला होना चाहिए।

प्राय: मनुष्य स्वयं को बहुत योग्य एवं ज्ञानवान मानने लगता है। और इस मानसिकता का प्रदर्शन करने से भी वह नहीं चूकता। श्री केलकर जी ने अपने एक भाषण में मनुष्य के इसी दोष की ओर संकेत करने के लिए सुकरात की यह उक्ति सुनाई थी :The more I read, the more I know, how little I know अर्थात् ज्ञान का भण्डार इतना बड़ा है कि ज्ञान की वृद्धि के साथ साथ ही मनुष्य को यह ज्ञान भी होता है कि उसका ज्ञान कितना कम है। मनुष्य को अपनी सीमाओं का ज्ञान कराने वाला इतना उद्‌बोधक संदेश मैंने श्री केलकर जी से ही सुना तथा वह मेरे मस्तिष्क पटल पर सदा के लिए अंकित हो गया।

अहंकार व्यक्ति को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है इसका एक उदाहरण श्री केलकर जी कई बार दिया करते हैं। केलकर जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक हैं तथा उन्होंने अनेक वर्ष प्रत्यक्ष संघ कार्य किया है। संघ में यह परम्परा रही है कि संघ का पूर्ण समय संगठनात्मक कार्य करने वाला प्रचारक बैठकों अथवा कार्यक्रमों में मंच पर न बैठकर कार्यकर्ताओं के भी पीछे एक सामान्य व्यक्ति की तरह बैठता है। यह परम्परा इसलिए विकसित की गई ताकि मुख्य संगठक होने के बावजूद भी प्रचारक नींव के पत्थर जैसी मानसिकता से काम करे तथा अहंकार एवं प्रतिष्ठा-लिप्सा से परे रहे। परंतु जैसे "मैं अहंकारी नही हूं" कहने वाला व्यक्ति वास्तव में अहंकार प्रदर्शन करता है, वैसे ही दरी के कोने पर बैठने के बावजूद भी प्रचारक "मैं ही सब चला रहा हूं" इस अहंकार से ग्रस्त हो सकता है। इसलिए केलकर जी कहा करते हैं कि मात्र दरी के कोने पर बैठने से अहंकार समाप्त नहीं हो जाता। अहंकार-विहीन होना एक मानसिक अवस्था होती है, न कि उसकी प्रदर्शनात्मक अभिव्यक्ति। यह सबक श्री केलकर जी ने शब्दों एवं आचरण द्वारा अनेकों कार्यकर्ताओं को सिखाया है।

आजकल नारी समानता, नारी स्वातंत्र्य अथवा नारी मुक्ति आदि विषयों की प्राय: चर्चा होती रहती है। नारी को पुरुष से हीन मानने की भावना के विरोध हेतु उपरोक्त विचार प्रस्तुत किए जाते हैं। श्री केलकर जी नारी को पुरुष के समान ही मानते हैं। अ. भा. विद्यार्थी परिषद में छात्र छात्राओं की समान भागीदारी को प्रोत्साहित करने के पीछे श्री केलकर जी का यही विचार काम कर रहा है। परिषद में न केवल छात्राओं की संख्या बढ़ रही है अपितु आज अनेक पूर्णकालिक महिला कार्यकर्तियां भी काम कर रही हैं। नारी संबधी इस मान्यता की वास्तविक परीक्षा पुरुष के वैवाहिक जीवन में होती है जब दैनंदिन जीवन में उसे पत्नी को अपने बराबर मानकर व्यवहार करना पड़ता है। श्री केलकर जी का अपनी पत्नी के साथ ऐसा ही आदर्शपूर्ण व्यवहार रहता है। मुझे स्मरण है कि जब मेरा विवाह हुआ तब श्री केलकर जी ने मुझे एक पत्र में लिखा था : You should not take your wife for granted. नारी विषयक अपने चिंतन से मुझे उन्होंने इस वाक्य द्वारा प्रभावित कर दिया।

सामाजिक कार्य में लगे व्यक्ति के मन में अनेक प्रश्न, शंकाएँ एवं उतार चढ़ाव पैदा होते रहते हैं। इस कारण उसे बार बार वार्तालाप एवं शंका समाधान की आवश्यकता पड़ती है। श्री केलकर जी ने परस्पर बातचीत एवं पत्र व्यवहार द्वारा सैंकड़ों कार्यकर्ताओं की यह आवश्यकता भी पूरी की है। मैंने प्राय: उन्हें किसी न किसी से वार्तालाप करते या लम्बे पत्र लिखते देखा है। सामाजिक कार्यकर्ता को अनेक निजी एवं पारिवारिक प्रश्नों को भी हल करना पड़ता है। केलकर जी इन प्रश्नों को हल करने में भी कार्यकर्ता का उतना ही सहयोग करते हैं जितना सामाजिक महत्त्व के प्रश्नों को हल करने में।

अभी कुछ समय पूर्व विद्यार्थी परिषद का ३० वां अ. भा. अधिवेशन पटना में संपन्न हुआ। अधिवेशन के अवसर पर घोषित की जानेवाली नयी कार्यकारी परिषद की सूचि की प्रति श्री बाल आपटे(परिषद के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं अ.भा, उपाध्यक्ष) बना रहे थे। उन्होंने ऐसे ही कहा कि आजकल मैं बहुत clerical काम करने लगा हूँ। श्री गोविंदाचार्य (परिषद के दक्षिणी क्षेत्र संगठन मंत्री) ने तुरंत हंसते हुए पूछा : "क्यों, फिर केलकर जी क्या करते हैं ?" गोविंदाचार्य जी का यह शरारतभरा प्रश्न वास्तव में श्री केलकर जी की एक और विशेषता को उजागर कर रहा था। गत 28 वर्षों में विद्यार्थी परिषद के केंद्र कार्यालय ने संबधित सामान्य clerical काम जितना श्री केलकर जी ने किया है, उतना शायद अनेकों कार्यकर्ताओं ने मिलकर भी नहीं किया होगा। विद्यार्थी परिषद की बैठकों का विस्तृत विवरण अपनी डायरी में लिखने का कार्य केलकर जी आज भी करते हैं। यदि कभी किसी ने परिषद के इतिहास पर शोध करना चाहा तो केलकर जी की डायरियां ही उसके लिए पर्याप्त होंगी।

# आन्दोलन के गर्भ में से ही सशक्त विकल्प जन्मेगा

—हरेन्द्रकुमार

अ. भा. विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री हरेन्द्र कुमार को छात्र आन्दोलन का पुराना अनुभव है। 1974 में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में शुरू हुए सम्पूर्ण क्रांति आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्णकालिक कार्यकर्ता के नाते वह पिछले 15 वर्षों से विद्यार्थी संगठन के कार्य में जुटे हैं। श्री पांडे के साथ अजय श्री वास्तव से बातचीत का।

**० विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन में इण्डियन एक्सप्रेस के सम्पादक अरुण शोरी ने छात्रों को आह्वान किया कि वे भ्रष्ट सरकार को बदलने के लिए काम करें। क्या छात्र शक्ति का उपयोग सिर्फ सरकार बदलने में किया जाना चाहिए।**

☐ पहली बात तो यह कि अब जनता की नजर से सरकारी भ्रष्टाचार को छिपाने के लिए राजीव सरकार अखबारों पर अंकुश लगाना चाहती है। इंडियन एक्सप्रेस की पत्रकारिता पर उंगली नहीं उठाई जा सकती। इस अखबार पर 1986 से सरकार दबाव डाल रही है, परेशान करने के लिए छापे मार रही है। मैं अन्दरूनी विवाद में नही पड़ना चाहता। कांग्रेस (इ) के लोगों ने ही हमें बताया कि एक मंत्री ने अरुण शोरी आदि को सबक सिखाने के लिए 50 गुण्डे किराए पर लगाए थे। हम प्रेस स्वतंत्रता के हिमायती हैं। अरुण शोरी विद्यार्थी परिषद के पास अपेक्षाएं लेकर आए। उनकी अपेक्षाओं को हम भारतीय पत्रकारिता की अपेक्षा मानकर संघर्ष में उनके साथ हैं। हम समाज परिवर्तन के मूल उद्देश्य से विचलित हुए बिना सत्ता परिवर्तन भी चाहते हैं। एक दबाव समूह (प्रेशरग्रुप) बनकर छात्र-शक्ति सरकार के गलत कामों पर अंकुश लगा सकती है।

**० क्या भ्रष्टाचार के विरुद्ध आपके संघर्ष में कम्युनिस्ट छात्र संगठन भी साथ हैं? उनसे आपकी क्या अपेक्षा है?**

☐ सभी कम्युनिस्ट या तथाकथित वामपंथी संगठन भी एक मत नहीं है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़े संगठन नवगठित राष्ट्रीय संघर्ष मोर्चा में शामिल नहीं हैं। जबकि सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर से संबद्ध छात्र युवा संगठन आल इण्डिया डेमोक्रेटिक यूथ आर्गेनाइजेशन और आल इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टूडेंट्स आर्गेनाइजेशन भ्रष्टाचार के विरोध के मुद्दे पर हमारे साथ हैं। भाकपा और माकपा के हमारे साथ रहने या न रहने से संघर्ष में कोई अन्तर नहीं आएगा। 1974 के आन्दोलन में भी ये दोनों साथ नहीं थे।

**० राष्ट्रीय संघर्ष मोर्चे का उद्देश्य क्या है?**

☐ उद्देश्य है राजीव सरकार के भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष करना। इसके अलावा सामाजिक, आर्थिक विसंगतियां, शिक्षा, बेरोजगारी, महंगाई आदि ऐसे मुद्दे हैं कि जिनके आधार पर लोगों में चेतना जगाई जा सकती है।

**० अप्रत्यक्ष रूप से इसका उद्देश्य सरकार को बदलना निकलता है?**

☐ हां, भ्रष्ट सरकार को बदलना ही होगा। राष्ट्र के सामने अब यह बहुत बड़ी चुनौती है। यदि भ्रष्ट सरकार बदल जाए तो बहुत सी राष्ट्रीय व स्थानीय समस्याओं को हल करने में आसानी हो जाएगी।

**० मान लिया कि अगले चुनाव में वर्तमान सरकार हार जाती है। लेकिन उसके बाद? क्या कोई सशक्त विकल्प सामने है?**

☐ अभी राष्ट्र में कोई विकल्प नहीं है, यह बात सच है। लेकिन यह भी सच है कि सशक्त विकल्प आन्दोलन के गर्भ से पैदा होता है। सन् '77 में 16 जनवरी तक कोई विकल्प नहीं था। उसके बाद सबने देखा कि विकल्प सामने आ गया। विकल्प तो बाध्य होकर उभरा, सत्ता परिवर्तन हुआ। इसी तरह कुछ राज्यों में भी विकल्प आन्दोलन से उभरा जैसे, असम, कर्नाटक, आन्ध्र और हरियाणा आदि में। लोग कांग्रेस (इ) से अब ऊब चुके हैं। वे बदलाव चाहते हैं, हम तो आन्दोलन के माध्यम से लोगों में चेतना भरके उन्हें सिर्फ संगठित करने का कार्य कर रहे हैं।

**० अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद या नवगठित राष्ट्रीय संघर्ष मोर्चा राजनीतिक दल नहीं है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध इस मोर्चे में कोई राजनीतिक दल शामिल नहीं है। क्या संघर्ष मोर्चा राजनीतिक विकल्प देगा ?**

☐ नहीं, राष्ट्रीय संघर्ष मोर्चा तो आन्दोलन चलाएगा। विकल्प तो राजनीतिक दलों से निकलेगा। यह समय और परिस्थिति पर निर्भर होगा कि कौन सा राजनीतिक दल या उनका गठबन्धन विकल्प दे।

**० आन्दोलन एक गैर-राजनीतिक मंच से चलेगा तो विकल्प राजनीतिक दल कैसे देंगे ?**

☐ अभी विभिन्न विपक्षी राजनीतिक दलों के छात्र-युवा संगठन मोर्चे में शामिल हुए हैं। बाद में जनान्दोलन की मजबूती देखकर राजनीतिक दल भी उसकी तरफ झुकेंगे। हम चाहते हैं कि संघर्ष मोर्चा राजनीतिक दलों के पीछे न चले बल्कि राजनीतिक दल उसके पीछे चलें।

**० कांग्रेस (इ) के हटने के बाद यदि विपक्षी दलों की सरकार बनी तो क्या गारन्टी है कि जनता पार्टी सरकार जैसी स्थिति फिर उत्पन्न नहीं होगी ?**

☐ इस बार छात्र शक्ति सरकार पर अंकुश रखेगी। हम हम उस सरकार का विरोध करेंगे जो भ्रष्ट तरीके से चलेगी। हम चाहेंगे कि विकल्प के रूप में जो भी सरकार आए, जनता उस पर अन्धविश्वास न करे जैसा कि राजीव सरकार के साथ किया था। जरूरत पड़ने पर उस सरकार को चेतावनी देने और बदलने के लिए भी तैयार रहे। यही वह अंकुश होगा जिसके दबाव में नई सरकार भी भटकेगी नहीं।

**० राष्ट्रीय संघर्ष मोर्चे का क्या कुछ प्रभाव वर्तमान राजनीतिक हल चलों पर पड़ा है ?**

☐ मैं यह दावा तो नहीं करता कि कोई बहुत अधिक प्रभाव हुआ है। लेकिन मोर्चे के गठन से हलचल जरूर हुई है। वि. प्र. सिंह और चन्द्रशेखर पहले दो धुरी पर थे। अब कुछ मुद्दों पर एकमत हो गए हैं। सूरजकुण्ड में विपक्षी एकता का सम्मेलन और एकता के नये प्रयासों की बातचीत शुरू होना भी एक शुभ संकेत है।

**० सत्ता और सामाजिक परिवर्तन में से विद्यार्थी परिषद किसे प्राथमिक देगी ?**

☐ यदि राजनीतिक अनुकूलता होती है तो सामाजिक परिवर्तनों के लिए प्रयत्नशील संगठनों को गति मिलती है। आज के समय राजनीतिक सत्ता की एक भूमिका अवश्य है, लेकिन सिर्फ उसी की भूमिका ही महत्त्वपूर्ण है, ऐसा नहीं है। सामाजिक सुधार सामाजिक संस्थाएं करेंगी। सत्ता तो सिर्फ अनुकूलता देगी। उदाहरण के लिए यदि राजनीतिक अनुकूलता होती तो शाहबानो वाले मुद्दे पर सामाजिक सुधार लाने में आसानी रहती। परन्तु सरकार ने उस सामाजिक सुधार के प्रयास में रोड़े अटकाए और महिलाओं को सलाखों के पीछे ढकेलने की व्यवस्था का साथ दिया। वर्तमान सरकार तो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुधार के प्रयास में रोड़े अटका रही है।

**० राष्ट्रीय संघर्ष मोर्चा और विद्यार्थी परिषद राजीव सरकार को हटाने के प्रयासों में लगे हैं, जबकि देश में सूखा और बाढ़ की स्थिति में लाखों लोग प्रभावित हुए हैं ?**

☐ यदि शासन भ्रष्ट होगा तो समाज के पीड़ित वर्ग तक सहायता भी नहीं पहुंच सकेगी। अतः सरकार के विरुद्ध आंदोलन भी जरूरी है। हमने छात्र शक्ति का उपयोग शिक्षा सेवा और संघर्ष के लिए किया है। विद्यार्थी परिषद ने अकेले ही 85,000 बाढ़ व सूखा पीड़ितों तक सहायता सामग्री पहुंचाई है। हम जब तक सेवा नहीं करेंगे, तब तक संघर्ष को ताकत नहीं मिलेगी। ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

इंग्लैंड में चर्चिल जब चुनाव हारे तो लोगों से उन्होंने कहा कि "मैंने तो द्वितीय विश्वयुद्ध में अपने देश को विजयी बनाया था फिर क्यों मुझे ठुकराया गया ?" उत्तर मिला कि "तुमने काम विध्वंस से शुरू किया था, तुम निर्माण नहीं कर सकते हो।" भारत में कम्युनिस्टों के टूटने-बिखरने का कारण भी यही है। वे विध्वंस चाहते हैं। डाकुओं और आतंकवादियों में कभी आपसी एकता नहीं रहती।

☐

# किस्सा एक्सप्रेस हड़ताल का

—मनोज कुमार मिश्र

इंडियन एक्सप्रेस समाचार समूह के दिल्ली संस्करण में पिछले दिनों हुई हड़ताल ने एक बार फिर प्रधानमंत्री को प्रेस की आजादी के सवाल पर कटघरे में खड़ा कर दिया। आपात्काल में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भी पहला हमला एक्सप्रेस समूह के समाचार पत्रों पर किया था। इस हड़ताल को देखते हुए लगता है कि सिनेमा की रील दुबारा दर्शकों को दिखा दी गई है।

एक्सप्रेस मजदूर यूनियन में हड़ताल से पहले वामपंथी विचारधारा वाले लोगों का कब्जा था। वैसे यूनियन के अध्यक्ष टी एम नारायन को सीटू से निकाला जा चुका है। 1986 में भी यूनियन ने 20 प्रतिशत बोनस मजदूरों को दिलाने के लिए एक हफ्ते तक हड़ताल की थी। लेकिन इसको बेअसर करने में प्रबंधक कामयाब हो गए।

1987 में भी अक्तूबर के पहले हफ्ते में यूनियन ने अपनी लम्बी-चौड़ी सूची स्थानीय प्रबंधक को थमा दी। 13 अक्टूबर को समझौते के लिए दोनों पक्ष के लोग बैठे। लेकिन थोड़ा विवाद होते ही यूनियन के लोग बाहर आकर नारे लगाने लगे और 14 अक्टूबर से एक्सप्रेस के तीनों अखबार—इंडियन एक्सप्रेस, जनसत्ता और फाइनेंसियल एक्सप्रेस के कर्मचारियों ने बेमियादी हड़ताल शुरू कर दी।

दो चार दिन तक हड़ताल चलने के बाद कर्मचारियों में धीरे-धीरे अफवाह फैलने लगी कि यह लड़ाई यूनियन और प्रबंधकों की नहीं है बल्कि यूनियन को आड़ में करके स्वयं इंका लड़ाई लड़ रही है। वैसे यह सच्चाई भी थी कि पिछले दो सालों से जब विपक्ष शून्य हो गया था। एक्सप्रेस ने पत्रकारिता की एथिक्स के हिसाब से सरकार के भ्रष्टाचार का भंडाफोड़ करना शुरू किया था। इस अभियान में रिलायंस घोटाला, फेयर फैक्स, जर्मन पनडुब्बी, और बोफोर्स इत्यादि प्रमुख मामले है जिस पर एक्सप्रेस के अखबारों ने बढ़ चढ़कर भंडाफोड़ करने में हिस्सा लिया।

स्वाभाविक तौर पर किसी भी सत्ताधारी पार्टी को यह ठीक नहीं लगेगा इसलिए पहले तो राजीव गांधी ने एक्सप्रेस समूह के मालिक श्री रामनाथ गोयनका और उनके सलाहकार के श्री एस० गुरुमूर्ति के घरों पर छापा मारकर उन्हें परेशान किया। यहां तक कि एक्सप्रेस के सभी कार्यालयों पर भी छापे मारे। लेकिन अखबार ने अपना रवैया नहीं बदला।

आखिर में यूनियन के माध्यम से इंका लड़ाई लड़ने लगी। यहां कर्मचारियों को जब यह यकीन हो गया कि वाकई यह हड़ताल बजाय मजदूरों के इंका के लिए की जा रही है तब मजदूरों ने एक्सप्रेस (गोयनका) के गेस्टहाउस सुंदर नगर में जाना शुरू किया। और 28 अक्टूबर को इंडियन एक्सप्रेस के प्रधान संपादक अरुण शौरी, जनसत्ता के प्रधानसंपादक प्रभाष जोशी और एक्सप्रेस के सलाहकार एस०गुरुमूर्ति की अगुआई में कर्मचारियों ने एक्सप्रेस बिल्डिंग में घुसने का फैसला किया। अरुण शौरी ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, भारतीय जनता पार्टी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् समेत सभी राजनैतिक और गैर राजनैतिक संगठनों को इसका साक्षी बनने का आमंत्रण दिया।

परिषद् के कार्यकर्ता भारी तादाद में आए और करीब तीन सौ कर्मचारी 28 अक्तूबर को अन्दर गए। लेकिन दिल्ली पुलिस की मेहरबानी से हंगामा हो गया और उसने टाइम्स आफ इंडिया के कर्मचारियों की पिटाई कर दी जिसके चलते सारे अखबारों ने एक्सप्रेस के खिलाफ एक दिन के बंद की घोषणा की। वैसे उस दिन छपी पांच हजार प्रतियां नहीं बिक पाई।

खैर दो-चार दिन में ही फिर से कर्मचारियों ने सुंदर नगर आना शुरू किया। 14 नवम्बर को केंद्रीय सरकार ने एक और धक्का दिया। उसने दिल्ली उच्च न्यायालय से एक्सप्रेस भवन पर अधिकार करने का फैसला दिलवाने का

आदेश जारी करवाया। एक्सप्रेस के सभी किरायेदारों को कोर्ट ने भूमि विकास बैंक को एक्सप्रेस के बदले किराया देने को कहा। और कोर्ट का मामला अभी भी चल रहा है। और क्या फैसला होता है यह भी देखना है।

14 नवम्बर के नोटिस के बाद कर्मचारी यूनियन में भी भूचाल आ गया। यूनियन के अध्यक्ष डोगरा और महासचिव चन्द्र मोहन अपने नागराज के नेतृत्व को मानने से इंकार करके हड़ताल समाप्त करने वाले मजदूरों का नेतृत्व करने लगे। हफ्ते भर में हालात बदल गए। कर्मचारियों ने नई यूनियन बना डाली और नागराजन को हटाने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित करके डोगरा को कार्यवाहक अध्यक्ष बनाया बनाया।

इस पूरी हड़ताल के दौरान इंकाईयों ने हड़ताल के अलावा भी खुलकर गुंडागर्दी की। चुन चुनकर करीब दो दर्जन कर्मचारियों की पिटाई की गई। पूरे शहर में दहशत फैल गई और कर्मचारियों को बाहर निकलना मुश्किल होने लगा।

लेकिन सुंदर नगर में कर्मचारियों की तादाद लगातार बढ़ने लगी। 26 नवम्बर को एक्सप्रेस के कुल 600 कर्मचारियों में से 550 कर्मचारियों ने अपना काम एक्सप्रेस बिल्डिंग में करने का फैसला लिया।

इसके पहले सुंदर नगर गेस्ट हाउस में ही थोड़ा बहुत काम होता था। इस बीच स्थानीय कोर्ट ने हड़तालियों को तबू 50गज दूर को जाने का आदेश दिया और बाद में कहा कि उन्हें काम करने वाले कर्मचारियों को टोकना नहीं है।

26 को कर्मचारी काम करने आए लेकिन दिल्ली पुलिस की कृपा से अन्दर नहीं जा पाए। फिरोजशाह कोटला मैदान में मौजूद करीब 450 कर्मचारियों ने एलान किया कि या तो वे काम करने जाएंगे और नहीं तो जेल। आखिर दरियागंज पुलिस ने गिरफ्तार करके उन्हें थाने ले गई। लेकिन शाम को उन्हें छोड़ दिया गया। उस दिन अतिरिक्त पुलिस आयुक्त वीरेन्द्रसिंह ने अरुण शौरी और बाद में सभी कर्मचारियों को आश्वासन दिया कि वे कल से सभी को एक्सप्रेस बिल्डिंग में अंदर जाने की व्यवस्था कराएंगे। लेकिन ऊपर के आदेश के कारण वे भी बीमार होने का बहाना करके दो दिन गायब हो गए।

आखिरकार पहली दिसम्बर को नई गठित यूनियन ने अंदर जाकर कार्य करने का फैसला लिया और तीनों अखबार के संपादकों ने पर्यवेक्षक के नाते सभी विपक्षी दलों के राष्ट्रीय नेताओं को बुलावा भेजा। पहली दिसम्बर को सवेरे आठ बजे 48 दिनों के बाद एक्सप्रेस के कर्मचारी सुंदरनगर गेस्ट हाउस से एक्सप्रेस भवन में काम करने के लिए आए और उस दिन वे कामयाब रहे।

बदले में उसी दिन रात को जनसत्ता के तीन कर्मचारियों पर तेजाब फेंका गया और कइयों को लाठी से मारा पीटा गया। इसके विरोध में देश भर में इंका और हड़ताली यूनियन की थू-थू हुई।

हड़ताल समाप्त होने के बाद तीनों अखबारों के संपादकों ने सभी विपक्षी पार्टी खासकर भा ज पा और विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्त्ताओं की सराहना की।

वैसे अभी तक हड़ताली नेताओं की वापसी नहीं हुई है। लेकिन अब वे इतने असंगठित हो गए हैं कि दूसरा कुछ कर पाने के हालात में नहीं है। इस हड़ताल के कारण संघ के विविध क्षेत्रों के कार्यकर्त्ताओं पर तरह-तरह के आरोप लगे। लेकिन सबने इसका दृढ़ता से मुकाबला किया और आखिर में विजय प्राप्त की।

# राष्ट्रीय अधिवेशन

—छात्र शक्ति संवाददाता

5, 6, 7, को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन आगरा कॉलेज मैदान स्थित अंबेडकर नगर में सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक राव मोडक ने ध्वजारोहण किया। महामन्त्री श्री हरेन्द्र पाण्डे ने वार्षिक वृत्त प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् विख्यात पत्रकार एवं 'इण्डियन एक्सप्रेस' के यशस्वी संपादक श्री अरुण शौरी ने दीप प्रज्वलित कर अधिवेशन का विधिवत् उद्घाटन किया। देश की सम्पूर्ण परिस्थितियों का आकलन एवं विश्लेषण करते हुए समाज ही नहीं राज्य भी बदल डालने की आवश्यकता पर श्री शौरी ने बल दिया।

परिषद् के राष्ट्रीय संगठन मन्त्री श्री मदन दास जी ने इतिहास पर दृष्टिपात करते हुए वर्तमान परिस्थिति में छात्र-शक्ति का उत्तरदायित्व विषय पर अपना सारगर्भित भाषण प्रस्तुत किया। भारतीय मजदूर संघ के अध्यक्ष श्री मनहर भाई मेहता ने भारत की आर्थिक स्थिति का विवेचन विश्लेषण करते हुए उसमें सम्भावित सुधारों की ओर इंगित किया।

अधिवेशन में 'देशद्रोही भ्रष्टाचार', राष्ट्रीय शिक्षा नीति: क्रियान्वयन, समीक्षा,' 'राष्ट्रीय परिस्थिति' एवं तिब्बत की स्वाधीनता' विषयों पर चार प्रस्ताव भी पारित किए गए।

अधिवेशन प्रारम्भ होने की पूर्व संध्या (4 नवं० 1987) पर एक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन आगरा विश्वविद्यालय आगरा के कुलपति श्री एस० के० अग्रवाल द्वारा किया गया।

अधिवेशन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों की संख्या लगभग 3000 थी।

**शहीद ज्योति : एक सद्भाव-यात्रा—**

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के तत्त्वावधान में अमृतसर स्थित श्री गुरुतेगबहादुर जी के पवित्र जन्मस्थल 'गुरु का महल' से शहीद ज्योति यात्रा का प्रारम्भ 25 नवम्बर 1987 को हुआ। मार्ग में पंजाब एवं हरियाणा के विभिन्न नगरों के लगभग 25 कालेजों में शहीद ज्योति का स्वागत किया गया। 10 दिसं० 1987 को ज्योति का स्वागत हरियाणा-दिल्ली सीमा स्थित नाथूपुर(?) ग्राम में किया गया। दिल्ली विश्वविद्यालय, बोट क्लब, श्री गुरु तेगबहादुर जी के बलिदान स्थल गुरुद्वारा शीशगंज में ज्योति का स्वागत एवं रात्रि विश्राम हुआ। 11 दिसं० मध्याह्न में गुरुद्वारा रकाबगंज (जहाँ श्री गुरु का संस्कार किया गया था) के मुख्य ग्रन्थी जी को ज्योति को सौंप दिया गया। गुरुद्वारा शीशगंज (बलिदान स्थल) से गुरुद्वारा रकाबगंज (संस्कार स्थल) तक उसी मार्ग का अनुसरण किया गया, जिस मार्ग से श्री गुरु को ले जाया गया था।

उक्त यात्रा का उद्देश्य पंजाब समस्या को सुलझाने के लिए एक सौहार्द्रपूर्ण वातावरण निर्माण करना था। यात्रा के दौरान हजारों युवाओं एवं छात्र-छात्राओं से इस दृष्टि से हुआ सम्पर्क उल्लेखनीय है।

ज्योति यात्रा में पंजाब प्रदेश संगठनमन्त्री श्री सूर्यकांत केलकर, उपाध्यक्ष सरदार रमेश सिंह गिल एवं मन्त्री सरदार सुरेन्द्र सिंह के नेतृत्व में परिषद् के कार्यकर्ता सम्मिलित हुए।

# दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघः चुनाव प्रसंग

## बेचना है लक्ष्य.....

—हरिओम

शिक्षक-हड़ताल के कारण दिल्ली वि० वि० छात्र-संघ के चुनाव इस बार पर्याप्त विलंब से, 14 नवंबर 87 को हुए। चुनाव में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद/जनता विद्यार्थी मोर्चा की ओर से अध्यक्ष, उपाध्यक्ष सचिव एवं सहसचिव के पद पर क्रमशः नन्रेद्र टंडन, अशोक अग्रवाल, कु० अन्नू सचदेव एवं आशीष प्रत्यागी थे। कांग्रेस (आई०) की छात्र शाखा एन० एस० यू० आई के राजेश गर्ग, धर्मवीर कु० अन्नू मल्होत्रा एवं दिनेश उक्त पदों के लिए उम्मीदवार थे। ध्यान रहे कि राजेश गर्ग वही व्यक्ति हैं जिन्होंने डेढ़ वर्ष पूर्व जनता विद्यार्थी मोर्चा छोड़कर एन० एस० यू० आई० के बागी मदन बिष्ट के साथ मिलकर दिल्ली छात्र मोर्चा का निर्माण किया था। इस वर्ष पुनः दल बदल करएन०एस०यू० आई० में से सम्मिलित हुए हैं। कहा जाता है कि इन्हीं के लिए वर्तमान कुलपति महोदय ने चुनाव लड़ने की अधिकतम आयु में एक वर्ष की वृद्धि की। दिल्ली छात्र मोर्चा वर्तमान अध्यक्ष अश्विनी कुमार छात्र संघर्ष समिति की कमजोर बैसाखी लगा अध्यक्ष पद के लिए चुनाव मैदान में थे

दिल्ली वि० वि० छात्र संघ में चुनाव में दो परस्पर विरोधी विचारधाराएँ एक दूसरे के समक्ष थी। एक ओर विश्वविद्यालयीन समस्याओं एवं व्याप्त भ्रष्टाचार का मूलोच्छेदन कर विश्वविद्यालय का वातावरण शुद्ध करने का दृढ़ संकल्प था तो दूसरी ओर हर प्रकार के भ्रष्टाचार में आकंठ निमग्न स्वार्थध्येयी लोग। एक ओर राष्ट्रीय समस्याओं को छात्र-समुदाय के सम्मुख रख इनसे जूझने एवं इनका निराकरण करने के लिए विद्यार्थी-मानस का निर्माण एवं दिशा निर्देश देने का महत् प्रयास था तो दूसरी ओर अपने ही नेता के राष्ट्र-विरोधी कार्यों में सहभागी उनका अंधानुकरण करने वाले नितांत व्यक्तिवादी एवं दम्भी लोग। कुछ ही समय में चीजें शीशे की तरह साफ नजर आने लगी थीं। अ० भा० वि० प०/ज० वि० मो० की विजय के विश्वास ने एन० एस० यू० आई० के तथाकथित छात्र नेताओं को बौखलाहट से भर दिया। परिणाम में बड़ा ही घिनौना खेल सामने आया। सत्ताधीशों के इन बगलबच्चों ने सरकारी मशीनरी का भरपूर दुरुपयोग कर अ० भा० वि० प०/ज० वि० मो० के उपाध्यक्षीय उम्मीदवार पर झूठा इल्जाम लगाकर गिरफ्तार कराया। न केवल इतना ही चुनाव की पूर्व रात्रि को ही ऐसा काला काण्ड किया, जिसे रात की कालिमा भी नहीं छुपा सकी दिल्ली स्थित गोल डाकखाना क्षेत्र में परिषद के अध्यक्षीय उम्मीदवार श्री नरेन्द्र टण्डन पर प्राणघाती आक्रमण उन्हें चाकुओं से गोद डाला गया। यह आक्रमण छात्र संघ चुनाव की किताब का काला पन्ना है, छात्र-समुदाय के मस्तक पर की गई ऐसी चोट है, जिस पर हाथ जाता रहता है और उस हाथ के स्पर्श से छात्र समुदाय के हृदय में ऐसी पीड़ा, ऐसी वेदना उठती है कि वह बार-बार सिहर उठता है।

अभिनन्दनीय है 'सदऽसदविवेकिनी बुद्धि' का धनी दिल्ली विश्वविद्यालय का छात्र। सारे संकोच, सम्पूर्ण हिचक को छोड़ उपर्युक्त दोनों पक्षों में से प्रथम पक्ष, राष्ट्र शक्ति छात्र शक्ति के उद्घोषकों के साथ आ खड़ा हुआ वह। अध्यक्ष के रूप में श्री नरेन्द्र टण्डन, सचिव के रूप में कु० सचदेवा एवं सहसचिव के रूप में श्री आशीष सूद का चुनाव हुआ। उपाध्यक्ष पर अल्प मतों के अन्तर से एन० एस० यू० आई० के बागी एवं निर्दलीय उम्मीदवार श्री अवधेश मिश्र निर्वाचित हुए।

## आखिर कब तक.....

अनेक सामाजिक रूढ़ियों एवं कुरीतियों के कारण हमारी बहिनें आज कैसी त्रासद स्थिति में से गुजर रही हैं,

(शेष पृष्ठ 14 पर।

# दिल्ली गतिविधियाँ

## 12 जनवरी—राष्ट्रीय युवा दिवस विवेकानन्द जयन्ती—राजीव/रणजीत/मूलचंद भार्गव

—छा० श० संवाददाता

(राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा चुनौती स्वरूप हमारे सामने खड़ी है। मार्क्सवादी इतिहासकारों ने भारतीय महापुरुषों को सतह के नीचे डालने की भरपूर कोशिशें की हैं तथा इनके व्यक्तित्व के ऊपर भी प्रश्नचिह्न लगाया जाता रहा है।

विद्यार्थी परिषद ने समय-समय पर इस मानसिकता के शिकार तत्वों का पर्दाफाश किया है।

स्वामी विवेकानन्द की 125वी जयन्ती का आयोजन विद्यार्थी परिषद ने व्यापक पैमाने पर करने का निर्णय लिया दिल्ली से प्रकाशित एक साप्ताहिक अखबार ने एक आलेख मे इसे 'सांप्रदायिकता' की संज्ञा दी। विवेकानन्द की जयंती सचमुच में पूरी सफलता के साथ विद्यार्थी परिषद की दिल्ली इकाई ने मनाया। प्रस्तुत है एक रिपोर्ट—सं०)

मुख्य कार्यक्रम विश्वविद्यालय परिसर में विवेकानंद की मूर्ति के सामने संपन्न हुआ।

स्वामी विवेकानंद की मूर्ति की पेंटिग कर फूलमालाओं से सजाकर आकर्षक तरीके से जयंती मनाई गई। यह कार्यक्रम हंसराज कॉलेज इकाई द्वारा आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता रामकृष्ण आश्रम के स्वामी चिन्मयानंद जी थे। अपने भाषण में चिन्मयानंद जी ने छात्रों एवं युवकों से देश का गौरव पुनः स्थापित करने की सलाह दी। विश्वविद्यालय के कुलपति श्री मुनीसराजा ने विवेकानंद को एक आदर्श पुरुष की संज्ञा दी।

हिन्दू कॉलेज इकाई ने 'शिक्षा का अधिकार', 'काम का अधिकार' आदि के सम्बन्ध में राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर पोस्टर लगाए।

(2) किरोड़ी मल कॉलेज

किरोड़ी मल कॉलेज इकाई ने विवेकानंद के आदर्शों और वर्त्तमान परिस्थिति से जुड़े सवालों को जोड़ते हुए सार गर्भित पर्चे निकाले। साथ ही दीनदयाल शोध संस्थान के सचिव श्री महेश चन्द्र शर्मा ने कॉलेज मैदान में कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित किया।

(3) श्यामलाल कॉलेज प्रातः

इस अवसर पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 12 वक्ताओं ने भाग लिया। महाविद्यालय के प्राचार्य इसके मुख्य अतिथि थे। प्रतियोगिता का विषय था, "धर्म राष्ट्रीय एकता में बाधक है।"

(4) श्यामलाल कॉलेज (सांध्य)

विवेकानन्द जयन्ती आकर्षक ढंग से मनाई गई। कॉलेज के प्राचार्य मुख्य अतिथि थे।

(5) पश्चिम विभाग

विद्यार्थी परिषद नियंत्रित शिवाजी कॉलेज छात्र संघ ने इस अवसर पर वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में शिवाजी, राजधानी एवं श्यामप्रसाद मुखर्जी कॉलेज के 400 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

राजधानी कॉलेज में एक गोष्ठी का आयोजन हुआ। साथ ही विवेकानन्द के बैज (Badges) वितरित किए गए।

(6) दयालसिंह कॉलेज

इस जयंती में करीब 100 छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे। 'पांच जन्य' के प्रबंध संपादक एवं वरिष्ठ पत्रकार माननीय श्री रामशंकर अग्निहोत्री, मुख्य अतिथि थे। दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र टंडन भी उपस्थित थे।

(7) डी० ए० वी० कॉलेज प्रातः

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में पांचजन्य के और 'मंथन' के पूर्व संपादक श्री देवेन्द्र स्वरूप मुख्य अतिथि थे। महाविद्यालय के प्राचार्य श्री मोहनलाल भी उपस्थित थे।

इसके अतिरिक्त पूर्वी विभाग मे भी कार्यक्रम हुए।

# 'किसी वाद से ग्रसित नहीं होना चाहिए'

**—स्वामी चिन्मयानन्द**

वेलूर मठ के स्वामी चिन्मयानन्द अ० भा० वि० प० द्वारा आयोजित विवेकानन्द जयंती के मुख्य अतिथि थे। छात्र शक्ति प्रतिनिधि अंजनी झा का स्वामी चिन्मयानन्द के साथ एक संक्षिप्त साक्षात्कार प्रस्तुत है।

छा० श० : विवेकानन्द को सम्प्रदाय विशेष का क्यों कहा जाता है ?

**स्वामी चिन्मयानन्द जी** : भारतवर्ष के निवासी हिन्दू है। इसी अर्थ से स्वामी विवेकानन्द का तात्पर्य था न कि किसी धर्म या सम्प्रदाय से। अतः आप उनको न तो किसी विशेष सम्प्रदाय का कह सकते हैं और न ही उनको कोई ऐसा अर्थ अभिप्रेत था।

छा० श० : छात्र संगठन छात्रहित साधन में कहां तक सफल है ?

**स्वामी जी** : स्पष्ट ज्ञान नहीं है।

छा० श० : छात्र संगठन का उद्देश्य क्या होना चाहिए ?

**स्वामी जी**: राष्ट्रीय दृष्टिकोण से छात्र शक्ति की भलाई करना ही उनका सर्वोपरि उद्देश्य है।

छा० श० : रामकृष्ण मिशन की कोई भौगोलिक सीमा है क्या ?

**स्वामी जी** : नहीं। यह अन्तरराष्ट्रीय संगठन है। चीन, क्यूबा और रूस को छोड़ प्रायः सभी देशों में हमारी शाखायें हैं।

छा० श० : रामकृष्ण मिशन के राजनीति में आने की कोई संभावना है ?

**स्वामी जी** : नहीं।

छा० श० : राष्ट्र विरोधी ताकतों को कमजोर बनाने का कोई योगदान ?

**स्वामी जी** : राष्ट्रीय एकात्मकता की भावना सबमें होनी चाहिए। हमें किसी वाद से ग्रसित नहीं होना चाहिए ?

छा० श० : हिन्दूहित साधन साम्प्रदायिक क्यों ?

**स्वामी जी** : बदलते वैधानिक परिवेश में सरकार और क्या कर सकती है ?

छा० श० : भ्रष्टाचार का निदान क्या है ?

**स्वामी जी** : गिरते हुए नैतिकमूल्य भ्रष्टाचार के कारण बनते हैं। हमें चाहिए कि भारतीय प्राचीन परम्परा से जुड़ी नैतिक शिक्षा का प्रसार करें। इसीसे भ्रष्टाचार का निदान हो पायेगा।

छा० श० : जन मानस के पतन के क्या कारण है ?

**स्वामी जी** : धर्म से विमुखता।

छा० श० : क्यों स्वामी जी हिन्दू संगठनों से ही सम्बद्ध रहे।

**स्वामी जी** : कारण स्पष्ट है। दूसरों का संशय और भ्रांति।

**प्रस्तुत अंजनीकुमार झा**

---

(पृष्ठ 12 का शेष)

इसका वर्णन असम्भव है। शिक्षा का सतत् प्रसार स्वार्थ एवं व्यक्तिगत सुविधा संयोजन के समक्ष बौना सिद्ध हो रहा है। पिछले दिनों राजस्थान की बहिन रूप कँवर का अपने पति की चिता में दाह, पुत्रियों को जन्म देने के पाप (?) से मुक्ति पाने के लिए दिल्ली के एक अस्पताल में एक बहिन द्वारा दूसरी बहिन राजबाला के पुत्र का अपहरण एवं कानपुर में तीन सगी बहिनों द्वारा फांसी पर झूल जाने की घटनाएँ हमारे लिए ऐसे कलंक है, जिन्हें धो पाना सम्भव नहीं होगा। कानपुर के कुली बाजार क्षेत्र की तीन शिक्षित बहिनों —एम० ए० पास गुड्डी, बी० ए० में पढ़ने वाली कामिनी एवं अलका ने सामूहिक रूप से आत्महत्या कर ली। कारण वही—दहेज की अनियंत्रित मांग और उसके समक्ष माता-पिता की विवशता। जितना पढ़ा-लिखा लड़का उतनी ही ज्यादा दहेज की मांग। बिना परिश्रम किए, बिना अपनी योग्यता का उपयोग किए कम-से-कम समय में, तुरंत सब साधन-सुविधा जुटा लेने की अकर्मण्य वृत्ति इस अभिशाप को और बड़ा बनाती जा रही है। नारी को नारी होने का दण्ड समाज कब तक देता रहेगा, आखिर कब तक·····।

# स्वामी श्रद्धानंद महाविद्यालय : समस्याएँ ही समस्याएँ

—प्रतोष कुमार

दिल्ली के ग्राम्य अंचल अलीपुर स्थित स्वामी श्रद्धानन्द महाविद्यालय की स्थिति दिन-ब-दिन शोचनीय होती जा रही है। यह विद्यालय जहाँ एक ओर विद्यार्थियों के लिए अत्यावश्यक सुविधाओं यथा पुस्तकालय, उपाहार गृह (कैण्टीन) परिवहन पास अनुभाग, यू स्पेशल्स पेय जल सम्बन्धी अनेक समस्याओं से त्रस्त है वही दूसरी ओर इसका भवन सबसे बड़ी समस्या बनता जा रहा है। कॉलेज का वर्तमान भवन तात्कालिक था, लेकिन जरा-जीर्ण होता यह भवन मानो स्थायी हो गया है। भवन्निर्माण के लिए स्थान मिल जाने के बावजूद निर्माण-कार्य का प्रारंभ न होना अधिकारी-वर्ग की उदासीनता का प्रमाण है। ज्ञातव्य है कि 'तकनीकी समिति' सन् 1983 ई० में ही इस भवन को खतरनाक घोषित कर चुकी है। 'नई शिक्षा नीति' में जहाँ एक ओर ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार को प्राथमिकता देने की बात की जा रही है, वही दूसरी ओर व्यवहार नकारात्मक दिशा में हो रहा है। अतः दिल्ली विश्वविद्यालय एवं प्रशासन से अनुरोध है कि इस ओर कारगर कदम उठाये जायें।

# रक्तदान : जनकल्याण

—राजीव

समाज-कल्याण के कार्यक्रमों का आयोजन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् संभावतः करती रहती है। 'मानवता की सेवा' के लिये एक लघु प्रयास के रूप में परिषद् ने दिल्ली के कतिपय महाविद्यालयों में रक्तदान-शिविरों का आयोजन किया। रामजस कॉलेज में जहाँ परिषद् ने अपने बैनर तले रक्तदान-कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संचालित किया वही किरोड़ी मल कॉलेज एवं हंसराज कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना की स्थानीय इकाइयों के साथ मिलकर उक्त कार्यक्रम चलाया। इन शिविरों में छात्र-छात्राओं के साथ शिक्षकों ने भी समान रूप से अपना योग दिया। परिणामतः हम 'इंडियन रेड क्रास सोसायटी' को कुल 348 रक्त-यूनिटें भेंट सके।

## उत्तरांचल के संगठन मंत्री माननीय श्री गोविन्दा चार्य जी का प्रवास

छात्रशक्ति संवाददाता

इस प्रवास के दौरान श्री गोविन्दा चार्य जी ने दिल्ली प्रदेश के लगभग सभी विभागों में कार्यकर्ताओं की अलग अलग इन बैठकें ली। बैठकों में चर्चाओं के माध्यम से उन्होंने कार्यकर्ताओं को सचाई, लगन एवं परिश्रम से कार्य करने की प्रेरणा दी। परस्पर तालमेल कायम कर ध्येयनिष्ठ होकर आगे बढ़ने से लक्ष्यसिद्धि निश्चित है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् भारतीय जनता पार्टी की विद्यार्थी शाखा नहीं है। परिषद पर इस प्रकार का आरोप सरासर गलत है। परिषद राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की दिशा में कार्य करने वाला स्वतंत्र संगठन है। श्री गोविंद जी ने 1949 ई० में परिषद के गठन से लेकर आज तक के संपूर्ण इतिहास का कथन भी कार्यकर्ताओं के समक्ष किया।

# On Birth Day Eve :
# Netaji Subhash Chandra Bose

—Swapan Barua

Netaji Subhash Chandra Bose left an indelible mark on India's history.

Netaji was born in an eminent Bengali family at cuttack, Orissa on January 23rd 1897. In his home Subhash was fortunate to grow in an environment conducive to the broadening of his mind. His going to English school first and then to Indian school and the interprovincial contacts and friendship even while at school, combined to Widen his horizon. Many of his earliest playmates were Muslim by religion because Bose's residence was in a predominently to Muslim locality.

In 1913 Subhash passed his matriculution, standing second in Calcutta University and joined the celebrated Presidency college. He came in contact with budding revolutionarees. He was imbibed by writings of Sri Ramkrishna, Paramhansa, Vivekanand and Sri Aurovindo. He tried to practice philanthropy Everyday he would beg from door to door for rice and ten paises to be utilized later for social service.

An important turning point of his life was his rustication from Presidency College because of manhanding of British Professor OCton although Subhash did not actually take part in assault. Then he had foretaste of leadership and the sacrifice and martyrdom it involved.

He completed his B A Honours philosophy from Scottish Church College in 1919 and later stood fourth in Indian Civil Service examination in July 1920. However he prefered to devote himself solely to liberate his motherland than joined bureaucracy. After completion of studies in cambridge.he sailed far away the Jun 1921 on a boat in which travelled also the great Ravindra-Nath Tagore the latter was to hail Subhash in 1938 as the leader of the country.

Immediately on landing in Bombay he called on Mahatma Gandhi. Both aspired to free India. But with Subhash it was an article of faith that use of force was necessary to dislodge the aliens gude from India's soil. Subhash joined Congress movement and grew in stlanrd become Congress President in 1938. His most important contribution as President was formation of National planning Committee.

He was jailed numerous times in 1941, he escaped from British suvillance and what to Germany. The cultninating point of his life was formation of Azad Hind Fauj and provisional government of free India on foreign soil.

With foreign armed assistance Azad Hind Fauj acquired the first Indian teritory in the Andaman and Nicober Island, fought inside Indian border. On 22nd Agust 1945, Tokyo, Radio announced that Netaji Subhash Chandra Bose had died on the 18th in an air crash. Many Indian mourned him so deeply that they halt expected as miracle that might make him reappear.

Subhash said, "Give me blood and I will give you freedom" His name will stay linked forever with the lovely slogan he had coined 'Jai Hind.'

# CHHATRA-SHAKTI : PERISCOPE

# ARIF NO 'RED'

Jan Morcha leader Arif Muhammed Khan is not V, P. Singh. He knows the behind the scene motive' of the Indian Communists, he refused to share platform with CPM. Democratic Teachers front(DTF) and jointly organised a seminar on 'Towards National alternative' on 2nd Feb. 1988. Arif was kept in darkness as far as the use of banner of SFI conserned. Soon after knowing marxist's trick Arif took firm stand not to participate. Despite it comrades used Arif's name in the posters to attract crowd.

*GAMBLE*

Ajay Maken, former DUSU president is highly disappointed with his Leader Rajiv Gandhi. He was instrumental in attacking V. P. Singh and his host in St. stephens college Delhi All he has done to prove his 'Loyalty' in a fascist manner. But he lost the Gamble when Manish Tewari was nominated all India president of NSUT (I). Now one can discern the colourful posters in the capital congratulating RG and Manish Tewari.

*NEW SCOPE FOR COMRADES*

'What is difference between SFI and AISF' is being mooted by a section of SFI Comrades who are ready to revolt against two crucial decision by the organisation.

Till 1987 SFI Comrades were not provided scholarship facilities in the eastern European countries. Since CPM is hobnobing with Communist Party of Soviet union(CPSU) this opportonity was made available to SFI friends ! And the organistation accepted it principally. "SFI like AISF would become scholarship recommending body, says one of SFI's top leaders." To appease Moscow SFI decided to join the Moscow Blessed Eastern European countries youth movement which means it can not take independent stand on the issues like latin America and south Africa as it used to do in the past. Three cheers for the comrades moving towards their (?) land i. e. Moscow.

*'RAMAYAN'—'COMMUNAL'*

Meet five star Thinkers ! They call T.V. seriel 'Ramayan' Communal. Here marxist historians join hand with Sayed Shahabuddin and M. J. Akbar. A marxist historian cancealled one programme to see 'Ramayan'. Here is marxist character...'Private life and 'Public thinking'. Is n't it?

होकर स्वतंत्र हमने देखो, संस्कृति को रखा गुलाब अभी
अंग्रेजी वर्ष नववर्ष मान, हर्षित होते हैं आज सभी
इस पवित्र भारत भू पर, नववर्ष हमारा कब आये?
नहिं ग्रीष्म-नहिं शीत अधिक, मनभावन मौसम जब आये।

संवत विक्रमी ऐतिहासिक, गुणगान हमारा करता है।
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा दिवस, नवशक्तिदायक बनता है॥
नववर्ष की पावन बेला पर, जग को दें संदेश यही,
हम सृष्टि निमन्ता वीर व्रती, हम क्षमाशील हम दानी हैं।

शुभाकांक्षी :
संदीप गुप्ता
दिनांक 18 चै० शु०
सं० 2045

**(अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद दिल्ली-प्रदेश कार्यकारी परिषद्**
**दि० 12 मार्च 1988 की बैठक में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव)**

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् दिल्ली प्रदेश की कार्यकारी परिषद् देश की अंग्रेजी शासन से मुक्ति के 40 वर्ष पश्चात् भी अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व बने रहने पर गहरा दुःख व्यक्त करती है। सरकार आज भी भाषा-विवाद के मुद्दे को हल नहीं कर पाई है।

सरकार द्वारा भाषा जैसे मूल प्रश्न को नई शिक्षा नीति से अछूता रख देश की जनता से विश्वास-घात किया गया है। सरकार जनता को द्विभाषी, त्रिभाषी भाषा-विवादों में उलझाये रख अंग्रेजी भाषा को बढ़ावा मात्र दे रही है।

कार्यकारी परिषद् की यह बैठक भाषा मुद्दे पर अपनी मांग दुहराते हुए पुनः पुरजोर मांग करती है कि राष्ट्रहित को ध्यान में रखते हुए भारतीय भाषाओं को ही संपर्क भाषा के रूप में उचित स्थान दे।

साथ ही कार्यकारी परिषद् की यह बैठक आई० आई० टी० की प्रवेश परीक्षा के प्रश्न-पत्र एवं उत्तर लिखने की भाषा में भारतीय भाषाओं को विकल्प माध्यम बनाने हेतु चल रहे आंदोलन का पूर्ण समर्थन करती है और शास्त्री-भवन पर चल रहे क्रमिक धरने एवं अनशन में विद्यार्थी परिषद् भी आंन्दोलन कर रहे छात्रों को पूरी शक्ति से साथ देने की घोषणा करती है।

**Andhra Pradesh**

# FIGHT FOR STUDENTS CAUSE

*—By our Correspondent*

Andhra Pradesh is one of those states where police atrocities and anti democratic attitude of the Govt. are being exposed by Akhil Bhartiya Vidyarthi Parishad.

Authorities of Osmani University are known for their indifference towards the students problems And they run administration with the help of police. ABVP presented a charter of demands to the Vice Chancellor who paid no attention to these genuine demands and eventually ABVP decided to start an agitation against the administration.

Hundred Students wanted to take procession from Arts College to Vice Chancellor's lodge but the police didn't allow them to do so. Agitators formed small groups and reached VC's lodge. More than 50 ABVP activists were arrested. At last university authorities conceded that "they had already with-drawn their decision to hike the hostel rent and degree fee".

★ ★ ★

**'MARXIST GOVT. EXPOSED'**

# VIOLENCE IN KERALA

*—By Chhatra Shakti Correspondent*

Since the Naynar Govt. of CPM and its left parties alliance assumed the power in the coastal state Kerala, its cadors adopted violent mean to suppress their political opponents. SFI and CPM activists taking the help of State police, started attack on ABVP workers, sympathisess.

Marxist Goondas destroyed three temples where RSS Shakhas used to take place. The growing and marching force ABVP has become a prime target of the CPM. Fascist style of suppression of political opponents would coast heavily CPM if it would not stop vandalism.

ABVP activists of Delhi University campus started wall writing against anti democratic attitude of the ruling party in Kerala. It is well known that believers in the violence SFI and its parent body CPM are equally anti-democratic as the Congress (I) governments in other states.

R. S. M. REPORT

# STRUGGLE IS THE RIGHTPATH

*—J.P. Nadda, National Secretary*

In the meeting of Rashtriya Sanghersh Morcha, held on December 23 here in Delhi it was decided that issues like corruption in high offices of Judiciary should also be exposed. It was the general view that Thakkar Natrajan Report is a classic example of bankruptcy of Judiciary as not even a single norm of Justice has been adhercd by two noted justices Thakkar & Natrajan. To expose this partial legal document the workers of R. S. M. gathered on 6th January 1988 in front of India Gate and marched to the Supreme Court raising slogans against Thakkar Natrajan Report.

The slogans included "Thakkar Natrajan Murdabad"

Thakkar Natrajan kaun hai—"Congress ka Dalal Hai"

Ye Report Dhokha hai—"Dhokha de do Inokha hai"

In front of the Supreme Court premises a rally was addressed by the R.S M. leaders. The prominent who spoke on the occasion were Mr. R. K. Sharma of A.I.D.Y.O., Mr. J. P. Nadda, National Secretary A. B. V. P., Miss Vasanta Kumari, National Secretary Yuva Janata, Mr. Tirlok Tyagi, General Secretary Yuva Lok Dal (A) & Mr. Vinod Tiwari, Bhartiya Shramik Sabha.

The speakers vehemently crtisised the report and said that even institutions like Supreme Court are working as hand in glove with the government. This seriously questions the integrity of judiciary in the public eye. The employees and lawyers of Supeme Court also joined the rally and supported the R.S.M. view.

Later the Report of Thakkar Natrajan was burnt and slogans against the Govt. and the two noted jurists were raised. The programme got a good coverage and due publicity except in a section of Press.

पाठकों से—

'छात्र-शक्ति' के लिये आपके सुझाव एवं लेख आदि सादर आमंत्रित हैं। कृपया लिखें—

संपादक, छात्र-शक्ति

द्वारा—अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् कार्यालय

१६/३६७६, हरध्यान सिंह मार्ग,

करोलबाग, नई दिल्ली - ११०००५

कृपया यह भी लिखें कि वर्तमान अंक आपको कैसा लगा ? इसे बेहतर बनाने के लिए आपके सहयोग का हम सादर स्वागत करेंगे।

—संपादक